मनीषा को लिखना आ गया तो मैं भी पास हो गई

अफ़रोज़ जहाँ

मैं भोपाल के बैरसिया ब्लॉक के अन्तर्गत आने वाले ग्राम मोतिया खेड़ा के प्राथमिक विद्यालय में 2021 से कार्यरत हूँ। देखा जाए तो गाँव से 3 किलोमीटर के दायरे में न तो कोई आँगनवाड़ी है न ही कोई अन्य शिक्षण केन्द्र। एकमात्र हमारा विद्यालय ही है जहाँ गाँव के अधिकांश बच्चे पढ़ने आते हैं। मुझे कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के विद्यार्थियों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी दी गई है। पढ़ाने के दौरान समझ आया कि कक्षा तीसरी में पढ़ने वाले विद्यार्थी अन्य कक्षाओं की अपेक्षा लिखने और पढ़ने, दोनों ही में पिछड़े थे। मुझे समझने में थोड़ा समय लगा कि इन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने के अवसर कम मिले हैं, इसलिए इनकी बुनियादी शिक्षा कमज़ोर रह गई।

कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में इस कक्षा में पढ़ने वाली मनीषा काफ़ी पीछे थी। उसका भाई संदीप भी कक्षा चौथी का छात्र था। जहाँ संदीप को पढ़ने में कठिनाई होती थी, वहीं मनीषा को पढ़ने के साथ लिखने में भी दिक़्क़त आती थी। वह उल्टे अक्षर बनाती थी। मैं कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों की तरह ही कक्षा शिक्षण के बाद उसे गृहकार्य देती। पर मुश्किल यह थी कि वह कभी भी काम करके नहीं लाती। उसके परिवार से बात की तो मालूम हुआ कि वह घर पर बस्ता ही नहीं खोलती। समझाने का उस पर कोई असर नहीं होता। मैंने अपने स्तर पर कई बार उससे बात की, पर उसका जवाब होता, "मैडमजी, मैं होमवर्क करना चाहती हूँ, पर मुझसे होता ही नहीं है। मैं सीधा लिखने का सोचती हूँ, पर उल्टा ही लिखा जाता है!"

ऐसा वक़्त भी आया जब मनीषा के रोज़ाना के इस बर्ताव पर कक्षा के अन्य विद्यार्थी उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे। पर उसे कुछ भी बोलो, वह मुस्कुरा देती। उसकी प्यारी-सी मुस्कान देखकर मेरा ग़ुस्सा भी शान्त हो जाता। मैं भी मुस्कुरा देती। साथी शिक्षक कहते, "मैडम, आप मुस्कुराती क्यों हैं? ऐसे तो यह और नहीं लिखेगी!" पर मेरा मानना है कि बच्चों को सज़ा से नहीं सुधारा जा सकता। स्नेहपूर्ण व्यवहार ही बच्चों को सहज बनाता है, और उनके सीखने में मदद करता है।

ख़ैर, कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों को छोटी-छोटी कहानी की किताबें, सरल टेक्स्ट पर काम करने को देती, वहीं मनीषा को लिखने के मौक़े ज़्यादा देती। मध्य प्रदेश राज्य की पहली कक्षा की पुस्तक *भाषा भारती* से प्रतिदिन उसे अभ्यास कराती, और सरल कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए देती। मनीषा को खेलना और कहानी सुनना अच्छा लगता था तो मैंने भी उसे सिखाने के दौरान इन्हीं तरीक़ों को प्राथमिकता में रखा। मुझे और कक्षा के विद्यार्थियों को हैरानी तब हुई जब वह इन पुस्तकों को बिना अटके अच्छे से पढ़ने लगी। उसने रोज़ाना अपनी इस समस्या पर काम किया। मनीषा का भाई संदीप भी धाराप्रवाह पढ़ने लगा। वे मौन वाचन करते, जोड़ी में पढ़ते तो कभी समूह में। इस प्रक्रिया से उनका पढ़ना बेहतर होता गया।

जब कभी मुझे कक्षा 1 एवं 2 के विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम मिलता, समूह कार्य की प्रक्रिया में मनीषा को भी शामिल कर लेती। वह बोर्ड पर अक्षर लिखती और दूसरे विद्यार्थी उनकी पहचान करते। इस काम में मनीषा के साथ छोटे विद्यार्थियों को भी मज़ा आता था। कभी विद्यार्थियों के साथ हवा में अक्षर / अंक बनाना, कभी एक दूसरे के हाथ पर उँगली से लिखना तो कभी मिट्टी व रेत पर यही प्रक्रिया करने का काम दोहराती। इसे मनीषा और छोटे विद्यार्थी रुचिपूर्वक करते। एक दिन मनीषा बोली, "मैडम, मैं भी बच्चों को पढ़ा सकती हूँ!" यह कहते समय उसकी आँखों में अलग ही चमक थी। धीरे-धीरे उसकी लिखावट सुधरने लगी। उसे कक्षा 1 एवं 2 की *अंकुर अभ्यास पुस्तिका* दीं। इनमें लिखने का कार्य उसने किया। विद्यार्थियों के स्तर में सुधार देखते हुए उन्हें हिन्दी / अँग्रेज़ी के शब्द बोर्ड पर लिखने का काम देने लगी। चूँकि विद्यार्थी चित्र की ओर जल्दी आकर्षित होते हैं, इसलिए कभी बोर्ड पर चित्र बना देती, जिसका शीर्षक वे लिखते। सही लिखने पर विद्यार्थी एक दूसरे के लिए ताली बजाते और ग़लत लिखने पर मदद करते। साल के अन्त तक आते-आते मनीषा सही शब्दों को लिखने के साथ ही पढ़ना-लिखना भी काफ़ी हद तक सीख गई थी। जब उसके शब्द सीधे होने लगे तो लिखने में भी उसकी रुचि अपने-आप बढ़ती गई।

इससे पहले मनीषा प्राय: संदीप के साथ ही पढ़ती-लिखती दिखती। कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से भी उसकी दोस्ती होने लगी। एक दिन काम पर जाते समय उसके मम्मी-पापा मिलने आ गए। उन्हें ख़ुशी थी कि उनके बच्चे उन्हें किताब पढ़कर सुनाते हैं, नाम लिखकर बताते हैं। बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने में उनका भी बड़ा सहयोग रहा।

कक्षा 5वीं के विदाई समारोह (फ़ेयरवेल पार्टी) के समय मनीषा ने सुन्दर लिखावट में विद्यार्थियों के लिए कार्ड बनाए। विद्यार्थी कार्ड पाकर ख़ुश थे। उन्होंने मनीषा को 'थैंक्स' कहा। मनीषा वैसे ही मुस्कुरा दी जैसे वह मुस्कुराती थी।

इस स्तर तक पहुँचने के पड़ाव बेशक कई थे। समय काफ़ी लगा, पर तसल्ली है कि मेरी मेहनत व्यर्थ नहीं गई। विद्यार्थी पढ़ने की उम्मीद लेकर विद्यालय आते हैं, और मैं उनकी इस उम्मीद पर काम कर पा रही हूँ। मनीषा को सिखाने के दौरान मेरा सीखना-समझना भी एक उपलब्धि ही है।

अफ़रोज़ जहाँ, प्राथमिक विद्यालय मोतिया खेड़ा, विकासखण्ड बैरसिया, भोपाल, मध्य प्रदेश

दिनचर्या कार्यपत्रक : एक छोटी पहल, बड़ा बदलाव

संतोष कुमार निर्मलकर

ग्रामीण क्षेत्रों में अकसर देखा जाता है कि विद्यार्थियों की दिनचर्या व्यवस्थित नहीं होती। विद्यालय आने से पहले और घर लौटने के बाद का समय वे अपनी इच्छा के अनुसार ही बिताते हैं। पढ़ाई, गृहकार्य, व्यक्तिगत स्वच्छता या समय प्रबन्धन जैसी बातों पर उनका ध्यान कम ही रहता है। अभिभावकों के विशेष ध्यान न देने पर विद्यार्थी अपना अधिकांश समय खेलकूद या इधर-उधर घूमने में व्यतीत कर देते हैं। परिणामस्वरूप वे अगले दिन बिना किसी तैयारी के विद्यालय पहुँच जाते हैं।

प्रार्थना सभा के दौरान जब हम विद्यार्थियों से उनकी दैनिक दिनचर्या के बारे में चर्चा करते थे तब कई चिन्ताजनक तथ्य सामने आते थे। कुछ विद्यार्थी बिना ब्रश या स्नान किए ही विद्यालय आ जाते थे। कई विद्यार्थियों ने कॉपी में दिए गए अभ्यास कार्य को घर पर खोलकर तक नहीं देखा होता था। सामान्यत: अभिभावक खेती-किसानी अथवा अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण बच्चों की पढ़ाई और दिनचर्या पर नियमित ध्यान नहीं दे पाते थे।

यह स्थिति हमारे प्रधान पाठक के लिए चिन्ता का विषय बनी। उन्होंने सुझाव दिया कि क्यों न विद्यार्थियों की दिनचर्या से सम्बन्धित एक कार्यपत्रक (वर्कशीट) तैयार किया जाए जिसे विद्यार्थी अपने अभिभावकों की सहायता से भरें, और प्रतिदिन उस पर अभिभावकों के हस्ताक्षर व संक्षिप्त टिप्पणी भी दर्ज हो।

चूँकि हमारे विद्यालय में प्रिंटर की सुविधा थी, इसलिए सभी विद्यार्थियों के लिए कार्यपत्रक तैयार करना आसान था। हमने उनकी दैनिक गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए एक कार्यपत्रक तैयार किया। इसमें सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक की महत्त्वपूर्ण आदतों को शामिल किया गया। इन आदतों में समय पर उठना, ब्रश करना, शौच जाना, स्नान करना, सुबह पढ़ाई करना, समय पर विद्यालय आना, खेलकूद के बाद हाथ-पैर धोना, शाम को अध्ययन करना तथा समय पर सोना शामिल था।

इसके अतिरिक्त, परिवार के सदस्यों के प्रति व्यवहार और मोबाइल के उपयोग जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को भी विशेष रूप से जोड़ा गया। दो सप्ताह की गतिविधियों को समेटते हुए कार्यपत्रक तैयार किया गया, और प्रत्येक विद्यार्थी को उसके नाम सहित वितरित किया गया। प्रार्थना सभा में नियमित रूप से उन्हें स्मरण कराया जाता कि वे अपने अभिभावकों की सहायता से कार्यपत्रक भरें।

एक सप्ताह बाद जब कार्यपत्रकों की समीक्षा की गई तो सकारात्मक परिणाम दिखाई देने शुरू हुए। विद्यार्थी समझ गए कि कार्यपत्रक तभी पूरा होगा जब वे निर्धारित गतिविधियों का पालन करेंगे। इससे वे सुबह समय पर उठने लगे, ब्रश, स्नान करने के साथ-साथ विद्यालय आने से पहले कम-से-कम एक घण्टा अध्ययन करने लगे। उनकी दिनचर्या में स्पष्ट सुधार दिखाई देने लगा।

समय-समय पर आयोजित विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठकों और अभिभावक चर्चाओं में भी इस कार्यपत्रक पर चर्चा होती रही। कई अभिभावकों ने इसकी सराहना की, विशेषकर मोबाइल उपयोग से सम्बन्धित बिन्दु को लेकर। जिन विद्यार्थियों का अधिकांश समय मोबाइल पर बीतता था, उन्होंने उसका उपयोग सीमित करना शुरू कर दिया। कुछ विद्यार्थियों ने तो इसे लगभग बन्द ही कर दिया।

इसी दौरान, कुछ अभिभावकों ने बताया कि बच्चे विद्यालय आने के लिए पैसे माँगते हैं। ये पैसे वो कुछ छुटपुट ख़र्चों—टॉफ़ी, बिस्कुट आदि ख़रीदने—के लिए माँगते हैं। अभिभावकों के लिए बच्चों की यह माँग भी मुश्किल हो रही थी। इस मुद्दे को अगले कार्यपत्रक में जोड़ लिया गया, और विद्यार्थियों से इस सम्बन्ध में खुलकर बातचीत की गई। 'पैसे माँगने से पहले सोचो' कार्यपत्रक के ज़रिए लम्बी

परिचर्चा कराई गई। इससे उन्हें अपनी वास्तविक ज़रूरतों और इच्छाओं में फ़र्क़ करना आया। विद्यार्थी यह भी महसूस कर पाए कि उनके अभिभावक कड़ी मेहनत करके पैसा कमाते हैं, और उस पैसे से घर के ज़रूरी ख़र्चे चलते हैं। परिणामस्वरूप, ऐसे विद्यार्थियों की संख्या में कमी आ गई जो विद्यालय आने के लिए अभिभावकों से पैसे माँगते थे। इस प्रकार, एक छोटी-सी पहल ने बड़ा बदलाव लाने का कार्य किया। विद्यार्थी स्वयं से भी पढ़ाई के लिए समय निकालने लगे। व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन, अध्ययन, जीवन व्यवहार तथा समय से सोने और उठने जैसी आदतों में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि इन कार्यपत्रकों के माध्यम से अभिभावक भी बच्चों की शिक्षा और दिनचर्या के प्रति अधिक सजग और गम्भीर हुए। यह केवल विद्यार्थियों के व्यवहार में बदलाव नहीं था, बल्कि विद्यालय और समुदाय के बीच सहभागिता को मज़बूत करने वाला एक प्रभावी प्रयास भी सिद्ध हुआ।

संतोष कुमार निर्मलकर, सहायक शिक्षक, शासकीय प्राथमिक शाला दुधवारा, धमतरी, छत्तीसगढ़

उर्दू स्कूल में कन्नड़ पढ़ाने के मेरे अनुभव

सुमलता एच कांबले

मैं कर्नाटक के बागलकोट ज़िले के जमखंडी तालुका के सरकारी उर्दू मॉडल सीनियर प्राइमरी स्कूल में कन्नड़ शिक्षिका हूँ, और कक्षा 4 से 7 के विद्यार्थियों को पढ़ाती हूँ। यहाँ मैं अपनी कक्षा में कन्नड़ भाषा सीखने में विद्यार्थियों को होने वाली समस्याओं, उनके लिए मेरे द्वारा खोजे गए समाधान, और प्राप्त परिणामों के बारे में अपने अनुभव साझा कर रही हूँ।

मैं जिन कक्षाओं में कन्नड़ पढ़ाती हूँ, वहाँ अधिकांश विद्यार्थियों को कन्नड़ अक्षरों का सही ज्ञान ही नहीं है। वे प्रत्येक अक्षर को पहचानने में समस्या का सामना करते हैं, और कन्नड़ अक्षर लिखने की शैली से भी परिचित नहीं हैं। उन्हें इन अक्षरों को लिखने का दक्षिणावर्त मॉडल (इ, ञ, ण, श, आदि) और वामावर्त मॉडल (अ, आ, ई, औ, ल, क, ज, आदि) कठिन लगता है। साथ ही, कौन-सा अक्षर ऊपर से नीचे लिखना है और कौन-सा अक्षर नीचे से, यह भी उनके लिए एक उलझन है। लेखन के साथ-साथ कन्नड़ में बोलना भी उनके लिए एक बड़ी समस्या है। वे अक्षरों और शब्दों के उच्चारण में बार-बार कठिनाई का सामना करते हैं। उन्हें कन्नड़ में धाराप्रवाह बात करने में काफ़ी समस्या है।

हमारा विद्यालय उर्दू मीडियम स्कूल है। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी उर्दू भाषी पृष्ठभूमि से आते हैं। उनकी मातृभाषा उर्दू है। घर में और रिश्तेदारों के बीच वे उर्दू बोलते हैं। स्कूल में वे कन्नड़ को केवल एक भाषा के रूप में सीखते हैं। इसके अलावा, विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन जैसे विषय उन्हें उर्दू माध्यम में ही पढ़ाए जाते हैं। इसलिए स्कूल में कन्नड़ सीखने की सम्भावना कम होती जाती है। मेरा मानना है कि स्कूल में कन्नड़ माहौल की कमी उनके भाषा सीखने में पिछड़ने का मुख्य कारण है। इसके साथ ही, कन्नड़ जैसी भाषा जो कि उनकी मातृभाषा नहीं है, उसे सीखने के प्रति उनमें रुचि की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्हें भाषा सीखने के महत्त्व के बारे में पता नहीं है। चूँकि घर के माहौल या आस-पास के वातावरण में कन्नड़ सीखने के अवसर बहुत कम हैं, इसलिए उनके लिए कन्नड़ सीखना स्वाभाविक रूप से कठिन हो रहा है।

एक शिक्षिका के तौर पर, यह सब देखकर चुप बैठना मेरे लिए सम्भव नहीं था। मैंने समस्याओं के बीच समाधान की सम्भावनाओं के बारे में सोचा। हालाँकि इस दिशा में पूर्ण सफलता सम्भव नहीं थी, फिर भी अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास करने की पहल की।

सबसे पहले, विद्यार्थियों के दैनिक अनुभवों को केन्द्र में रखकर बातचीत करते हुए उर्दू भाषा के माध्यम से कन्नड़ में भी बात करने की द्विभाषी पद्धति का उपयोग किया। दैनिक जीवन के कई प्रचलित शब्दों के बारे में कन्नड़ में जागरूकता पैदा करने, उनका उच्चारण करने, और उन्हें पहचानने पर ज़ोर दिया। इसके बाद, विद्यार्थियों को कन्नड़ के प्रत्येक अक्षर को लिखने का अभ्यास कराने की विधि अपनाई। उनका ध्यान खींचने के लिए अक्षरों के आकर्षक 'फ़्लैश कार्ड' (मिंचुपट्टी) तैयार किए। न केवल ख़ुद फ़्लैश कार्ड बनाए, बल्कि विद्यार्थियों को तरीक़ा सिखाकर उनसे भी बनवाए। जैसे—मूल अक्षर अ, आ, उ, ए, क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब, य, ल, व, आदि। प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक अक्षर का फ़्लैश कार्ड बनाने के लिए कहा।

बाद में, दैनिक उपयोग के सरल अक्षरों वाले शब्दों का उच्चारण करवाया, उनके चित्र दिखाए, और उन्हीं शब्दों के फ़्लैश कार्ड बनाकर उनका ध्यान आकर्षित किया। उनके प्रत्येक शब्द (जैसे—अरसा, आटा, हरा, हणा, बलग, बलप, ओटा, पदक, रथ, औषध, आदि) के उच्चारण पर ध्यान दिया। इस अभ्यास के बाद, दैनिक शब्दों और वाक्यों के माध्यम से कन्नड़ के 'गुणिताक्षर' और 'संयुक्ताक्षर' का परिचय देने का प्रयास किया। मिसाल के तौर पर, आने, इलि, हावु, कागे, मने, कज्जाय, चक्कुली, एत्तु, चप्पली, कल्ला, बेल्ला, आदि। इस दौरान, मैंने प्रत्येक शब्द में शामिल अक्षरों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। उदाहरणार्थ, आने = आ + न् + ए, इलि

= इ + ल् + इ, हावु = ह् + आ + व् + उ, मने = म् + अ + न् + ए, कागे = क् + आ + ग् + ए, आदि। इस मॉडल में फ़्लैश कार्ड का उपयोग करके स्वर और व्यंजन सिखाने का प्रयास किया। दोहराव वाली गतिविधि होने के कारण इससे सीखने का सुदृढ़ीकरण एक साथ हो रहा था।

मेरे लिए सबसे अधिक फ़ायदेमन्द रहा था—'पैलिंड्रोम'। यानी नलागे सुरुली—आगे और पीछे से एक जैसे पढ़े जाने वाले शब्द—मनोरंजन, शिक्षण और प्रोत्साहन की दृष्टि से विद्यार्थियों के लिए मज़ेदार खेल बन गए, क्योंकि इन्हें दाएँ तरफ़ से लिखें या पढ़ें या बाएँ तरफ़ से लिखें या पढ़ें, वे एक जैसे ही रहते हैं। इससे न तो उच्चारण में कोई अन्तर आता है न ही अर्थ में। आमतौर पर विद्यार्थी उर्दू लिपि दाएँ से बाएँ लिखते और पढ़ते हैं। कन्नड़ लिपि बाएँ से दाएँ लिखी और पढ़ी जाती है। इस तकनीक के उपयोग से सभी विद्यार्थी बिना किसी लिपि भेद या भाषा भेद की बाधा के इन शब्दों को आराम से पढ़ सके। साथ ही, वे आसानी से समझकर लिखने और उच्चारण करने में सक्षम हुए। इससे विद्यार्थियों में सीखने की रुचि बढ़ी। ये शब्द थे—सरस, नयन, कनक, नमन, आदि। इनके परिचय से पहले इनके चित्रों का उपयोग करना और भी फ़ायदेमन्द रहा।

मेरा एक और प्रयोग उन विद्यार्थियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में था जो कक्षा में बोलने से हिचकते थे। उन्हें प्रेरित किया कि चाहे वे ग़लत हों या सही, पहले कुछ कहें। शुरू में मना करने वाले विद्यार्थी धीरे-धीरे अपनी झिझक छोड़कर इसके अभ्यस्त हो गए। भले ही वे आधी कन्नड़ और आधी उर्दू बोलते, फिर भी मैं चुप रहती थी। मैंने उनका मज़ाक़ नहीं उड़ाया। उन्होंने जो कुछ भी बोला, उसे वैसा ही स्वीकार किया। इससे उनमें आत्मविश्वास आया। इसके लिए चित्र दिखाकर बात करवाना, भूमिका निभाना (रोल-प्ले), कहानियाँ सुनाना, बाज़ार जाने की बातें, त्योहारों का मज़ा, घर पर बनी विशेष डिश पर चर्चा जैसे नए-नए तरीक़े खोजे ताकि विद्यार्थी खुलकर अभिव्यक्ति कर सकें।

जब कक्षा में पाठ्य और पाठ्येतर भावगीत गवाने या उनके ऑडियो-वीडियो देखने-सुनने की व्यवस्था की तो विद्यार्थियों ने इसमें रुचि और जिज्ञासा के साथ भाग लिया, क्योंकि यह उनके लिए एक नया अनुभव था। बाद में, बनाई गई धुन में मैंने और विद्यार्थियों ने मिलकर उन गीतों को सामूहिक रूप से गाया, और कक्षा में सुखद वातावरण बनाया।

अब तक उपयोग किए गए फ़्लैश कार्ड, ऑडियो-वीडियो और चित्रों को कक्षा में अलग से रखा गया ताकि विद्यार्थी अपने ख़ाली समय में उनका उपयोग कर सकें।

मैंने कक्षा में भयमुक्त वातावरण बनाया था, इसलिए विद्यार्थी बिना नागा मेरी कन्नड़ कक्षा में आने लगे। यहाँ तक कि जब दूसरे शिक्षक छुट्टी पर होते थे, वे मुझे दूसरी कक्षाओं में भी कन्नड़ गतिविधियों के लिए ले जाने लगे। अब पाठ ख़त्म होते ही वे फ़ौरन उसके प्रश्न-उत्तर लिखकर दिखाते थे। उन्होंने गृहकार्य बहुत लगन के साथ करना शुरू कर दिया। ब्लैकबोर्ड पर लिखने के लिए उनमें होड़ मचने लगी। उत्साह इतना था कि उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि अब स्कूल के कार्यक्रमों में स्वागत गीत कन्नड़ में ही हों। इससे बड़ी ख़ुशी मेरे लिए और क्या हो सकती है! कन्नड़ स्कूलों में ऐसा माहौल स्वाभाविक है, लेकिन उर्दू स्कूल में कन्नड़ सीखने के प्रति विद्यार्थियों की यह जिज्ञासा, उत्साहजनक व अनूठी है। इससे सभी विद्यार्थियों की लिखावट दिन-ब-दिन स्पष्ट होने लगी। ब्लैकबोर्ड, फ़्लैश कार्ड, अभ्यास पत्र और कॉपी बुक में लिखकर उनके कन्नड़ अक्षर सुन्दर दिखने लगे। कुल मिलाकर, उर्दू स्कूल के विद्यार्थियों की कन्नड़ सीखने के प्रति यह ललक मेरे पेशेवर जीवन का एक सार्थक और सन्तोषजनक क्षण है जिसे मैं कृतज्ञता के साथ कह रही हूँ।

कन्नड़ से हिन्दी में किरन मंजुनाथ द्वारा अनुवादित।

सुमलता एच कांबले, शिक्षिका, सरकारी उर्दू मॉडल सीनियर प्राइमरी स्कूल नं. 3, जमखंडी उर्दू, बागलकोट, कर्नाटक